विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ **दिनांक -01 – 09 - 2021**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज व्यंजन सन्धि के बारे में पुनः अध्ययन करेंगे।

व्यंजन सन्धि

व्यंजन सन्धि:

जब किसी व्यंजन के साथ किसी स्वर या व्यंजन का मेल हो, तो वह व्यंजन सन्धि' कहलाती है।

व्यंजन सन्धि के प्रमुख नियम इस प्रकार हैं

नियम 1:

यदि किसी वर्ग के प्रथम या तृतीय वर्ण से परे अनुनासिक वर्ण रहे, तो वह निज वर्ण का अनुनासिक होकर अगले वर्ण से मिल जाता है; जैसे

जगत् + नाथ = जगन्नाथ, उत् + मत्त = उन्मत्त।

नियम 2:

क, च, ट, त, प से परे किसी भी वर्ग का तीसरा या चौथा व्यंजन अथवा स्वर आए, तो क, चे, ट, त, प का क्रमशः गे, ज, ड, द, ब हो जाता है; जैसे- सत् + आचार = सदाचार

जगत् + ईश = जगदीश

दिक् + गज = दिग्गज

अच् + अन्त = अजन्त

षट् + दर्शन = षड्दर्शन

वाक् + जाल = वाग्जाल

षट् + आनन = षडानन्

नियम 3:

त्, दु या नु के आगे ल रहने से इसका भी लु हो जाता है, परन्तु 'न' के लिए चन्द्रबिन्दु

भी लगता है; जैसे- उत्+ लास = उल्लास। महान् + लाभ = महाल्लाभ। तत् + लीन = तल्लीन।

नियम 4

'त्' या 'द्' के आगे ज, झ रहने से 'ज' हो जाता है; जैसे- उत् + ज्वल = उज्ज्वल। विपद् + जाल = विपज्जाल। सत् + जन = सज्जन।

नियम 5

'त' या 'द्' के आगे 'ट', 'ठ' रहने से " हो जाता है; जैसे- तत् + टीका = तट्टीका।।

नियम 6

'त्' या द् के आगे 'इ' हो जाता है; जैसे- उत्+डयन = उड्डयन। तत् + डमरु तड्डमरु।